समर्पण

श्रीमद्रामचरितमानसके निर्माणकर्त्ता जगत्के आचार्य
भगवान् श्रीशंकरजी और उन्हींके अवतार श्रीरामचरितके
अनन्य रसिक और श्रोता श्रीसीताराम-गुणग्राम-पुण्यारण्य-
में निरंतर विहार करनेवाले मंगलमूर्त्ति पवनपूत रामदूत
श्रीहनुमान्‌जी एवम् श्रीमद्गोस्वामि तुलसीदासजी
महाराज जिनके द्वारा आज जगत्‌में वह चरित
प्रकाशित हो लोगोंको श्रीराम-सन्मुख कर
रहा है तथा वैष्णवरत्न परम कृपालु श्री
१०८ श्रीसीतारामशरण भगवानप्रसाद
रूपकलाजी जिनकी आज्ञानेही
स्वयं "मानस पीयूष" रूप धारण
किया और स्वामी श्री १०८
पं० रामवल्लभाशरणजी
महाराज व्यास जिन्होंने
इस ग्रंथका नामकरण
किया—

इन्हीं आप सब महाभागवतोंके करकमलोंमें यह "मानस-पीयूष"
सादर सविनय समर्पण करके प्रार्थी हूँ कि इसे स्वीकार करें
और इस दीनको अपना शिशु और जन जानकर इसको
श्रीसीतारामजीके चरणकमलोंमें वह अनूठा सहज
अविरल अमल अटल एकरस निरंतर अनुराग
और दृढ़ श्रद्धा विश्वास प्रदान करें जिससे प्रभु
तुरत द्रवते हैं।

आपका शिशु—

ज० सु० श० शीतलासहाय